

# सुबोध हस्त रेखा

डॉ० नारायणदत्त श्रीमाली





ज्योतिष में हस्तरेखा-शास्त्र सबसे कठिन माना गया है। ज्योतिष के सुप्रसिद्ध विद्वान् डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली ने इस विज्ञान को चित्रों के माध्यम से इतनी सरल भाषा में समझा दिया है कि इस विषय के अनभिज्ञ व्यक्ति को भी ज्योतिष में रुचि हो जाती है।

हमारा दावा है कि इसके मनन से पाठक न केवल सड़क-किनारे के ठगों से बचे रहेंगे बल्कि अपना एवं अपने मित्रों-परिचितों के जीवन भी हाथ की रेखाओं से पढ़ सकेंगे और अपने क्षेत्र में लोक-प्रियता व प्रसिद्धि का साधन भी पा जायेंगे।



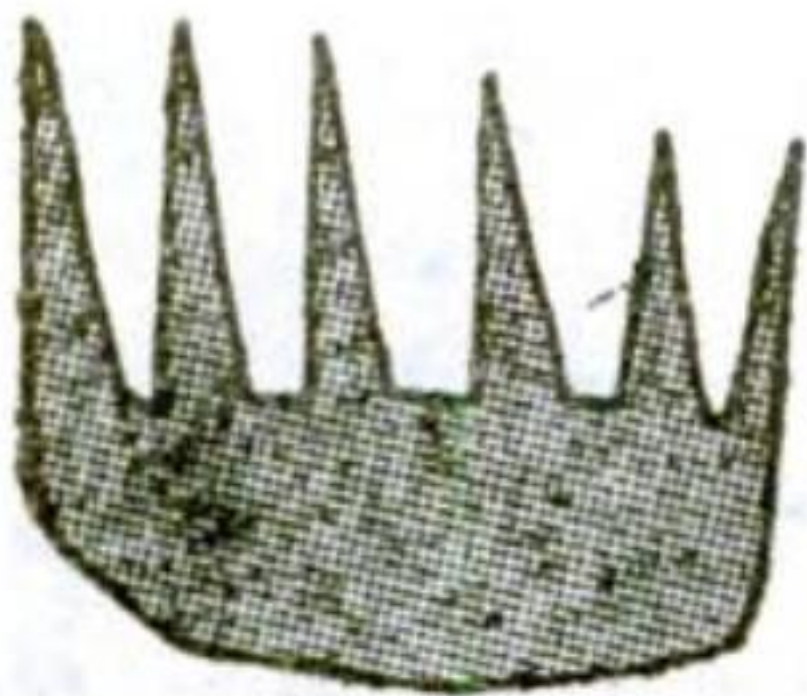


**सुधा पब्लिकेशन्स**

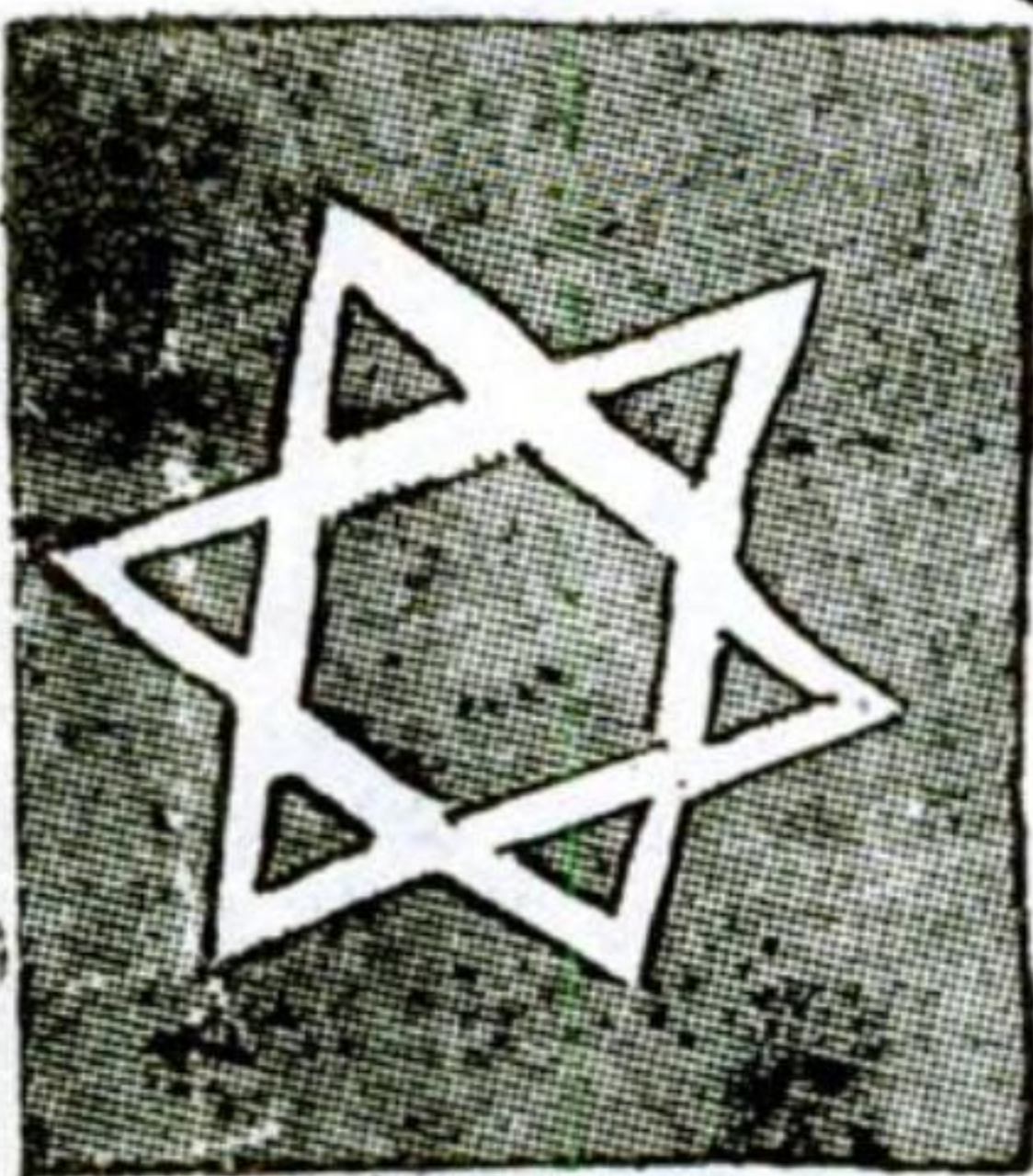
Copyrighted material



# सुबोध हस्त रेखा



डा० नारायणदत्त श्री माली





© सुबोध पॉकेट बुक्स

ISBN: 978-81-7078-079-3

Rs 15.00

---

सुबोध पब्लिकेशन्स, २/३ बी, अंसारी रोड, नई दिल्ली-२ /

संस्करण : १९९२ / मुद्रक : जयमाया आफसेट, शाहदरा, दिल्ली-३३

HAST REKHA : Dr. Narain Datt Shrimali



## दो शब्द

ज्योतिष में सामुद्रिक शास्त्र सर्वाधिक दुष्कर और कठित माना गया है। रेखाओं को पढ़ पाना और तदनुसार सही-सही अर्थ निकाल लेना अत्यन्त परिश्रम, प्रतिभा और अध्ययन की अपेक्षा रखता है। मैंने इस पुस्तक में इसी जटिल और दुरूह विषय को सरल-से-सरल बनाकर सर्वसाधारण के लिए बोधगम्य बनाने का प्रयास किया है।

मैंने इस पुस्तक में कुछ विशेषताएँ रखी हैं—एक तो यह कि प्रत्येक विषय को चित्रों के माध्यम से बोधगम्य बनाकर समझा जाय; दूसरे, इस विवेचन का पुष्टि में जीवन से अनुभूत उदाहरण देकर कथन को प्रामाणिक बनाया जाय, जिससे न केवल विषय के समझने में सुविधा रहे, अपितु उस समझ में एक दृढ़ता उत्पन्न हो सके; तीसरे, मैंने विषय को पूर्णतः शास्त्रसम्मत रखने का प्रयास किया है।

कुछ अध्याय इसमें ऐसे दिये हैं, जो सम्भवतः पहली बार प्रकाश में आ रहे हैं; अभी तक सामुद्रिक शास्त्र पर प्रकाशित पुस्तकों में कहीं भी इन विषयों पर लिखी सामग्री देखने को नहीं मिली। घटनाओं का काल निर्धारण, हस्त-रेखाओं से जन्म-तारीख व जन्म-पत्र बनाना आदि विषय अभी तक सर्वथा गोपनीय थे, जिन्हें पाठकों के हितार्थ पहली बार प्रकाश में लाया जा रहा है।

मेरी ज्योतिष-सम्बन्धी पुस्तकें पाठकों में अत्यन्त लोकप्रिय रहीं, और उन्हें प्रत्येक पुस्तक में कुछ नवीनताएँ मिलीं, यह उनके नितप्रति आते पत्रों से ध्वनित है। मैं उन्हें धन्यवाद देता हूँ, और आभारी हूँ प्रकाशक महोदय का, जिनकी लगन, तत्परता और सहयोग से ही यह पुस्तक इतने सुन्दर रूप में आप तक पहुँच सकी है।

नारायणदत्त श्रीमाली

This One



ON24-9WS-76K7



## विषय-सूची

### १. प्रवेश

११—१५

सामुद्रिक शास्त्र और ज्योतिष; सामुद्रिक की ऐतिहासिकता; मानव-विकास—गुण, अवयव, आकृतियाँ तथा स्वभाव; हाथ, हथेली और रेखाएँ; हाथ के अध्ययन-हेतु मुख्य निर्देश ।

### २. हाथ

१५—२६

सामान्य जानकारी; त्वचा—कोमलता, कठोरता, रूक्षता, रंग आदि; हाथ की वनावट; सात प्रकार के हाथ, उनके गुण, उनका वर्गीकरण और संबंधित फल-विवेचन; निष्कर्ष ।

### ३. अंगूठा, उँगलियाँ और नाखून

२६—४३

तर्क और इच्छा-शक्ति का प्रधान केन्द्र; अंगूठों के भेद; विभिन्न आकृतियों के अंगूठे और गुण-दोष; अंगूठे के भाग—पोरुआ तथा उनके गुण-दोष ; उँगलियाँ—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठिका; प्रत्येक उँगली का विवेचन; उँगलियों के सम्बन्ध में विशेष तथ्य; उँगलियों पर पाये जाने वाले चिह्न व उनका विवेचन ; नाखून—नाखूनों के भेद, उन पर पाये जाने वाले चिह्न तथा फल-विवेचन ।

### ८. पर्वत

४४—९३

पर्वत और पर्वतों के भेद; पर्वतों से सम्बन्धित ग्रह तथा उनका विवेचन; ग्रहों के क्षेत्र; प्रत्येक ग्रह से संबंधित मुख्य बातें; फल-विवेचन एवं निष्कर्ष; पर्वत-युग्म, विवेचन व फल-कथन; पर्वतों पर अंकित चिह्न व उनका प्रभाव; धनात्मक पर्वत, ऋणात्मक पर्वत; निष्कर्ष ।



## ५. रेखाएँ

७३—८०

सामान्य परिचय ; मुख्य रेखाएँ—जीवन-रेखा, मस्तक-रेखा, हृदय-रेखा, सूर्य-रेखा, भाग्य-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा, विवाह-रेखा, प्रत्येक रेखा का परिचय व फल-विवेचन; गौण रेखाएँ—गुरु-रेखा, मंगल-रेखा, शनि-वलय, रवि-वलय, शुक्र-वलय, चन्द्र-रेखा, प्रतिभा-रेखा, यात्रा-रेखा, संतति-रेखा, मणिबंध-रेखाएँ, आकस्मिक-रेखाएँ, उच्चरुद रेखाएँ आदि, प्रत्येक रेखा का विवेचन, फल-कथन ; रेखाओं के भेद, रेखाओं के सम्बन्ध में मुख्य तथ्य ।

## ६. रेखाओं के उद्गम-स्थान तथा परिचय

८०—८८

रेखाएँ तथा हथेली में उनके उद्गम-स्थान; जीवन-रेखा, मस्तिष्क-रेखा, हृदय-रेखा, सूर्य-रेखा, भाग्य-रेखा, स्वास्थ्य-रेखा, विवाह-रेखा; सभी के उद्गम-स्थलों का विवेचन ; गौण रेखाएँ तथा उनके उद्गम-स्थल, अवसान-स्थल, विवेचन ; निष्कर्ष ।

## ७. जीवन-रेखा

८८—९६

सामान्य परिचय; उद्गम और विकास ; पथ-चिह्न आदि ; परिवर्तनीय स्वरूप; जीवन-रेखा के स्थल, जीवन-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न, प्रभाव तथा फल-विवेचन ; जीवन-रेखा और प्रभावक-रेखाएँ; जीवन-रेखा के सम्बन्ध में नूतन तथ्य; निष्कर्ष ।

## ८. मस्तिष्क-रेखा

९६—१०४

सामान्य-परिचय; मस्तिष्क-रेखा के विभिन्न उद्गम-स्थल; प्रत्येक उद्गम-स्थल का संक्षिप्त परिचय ; मस्तिष्क-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न-प्रभाव तथा फल-विवेचन ; मस्तिष्क-रेखा और प्रभावक रेखाएँ; मस्तिष्क-रेखा के सम्बन्ध में नूतन तथ्य ; प्रतिभा-रेखा ; निष्कर्ष ।

## ९. हृदय-रेखा

१०४—११४

सामान्य परिचय ; हृदय की चार अवस्थाएँ ; उद्गम-स्थल तथा



उनका विवेचन ; हृदय-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न, प्रभाव तथा फल-विवेचन; हृदय-रेखा तथा संबंधित प्रभावक रेखाएँ; हृदय-रेखा से संबंधित नूतन तथ्य, फलादेश; निष्कर्ष ।

### १०. यश-रेखा (सूर्य-रेखा)

११४—१२४

सामान्य परिचय ; यश-रेखा के उद्गम एवं अवसान-स्थल उनके प्रकार, तथा संबंधित फलादेश; यश-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न-प्रकार, प्रभाव तथा फल; यश-रेखा तथा प्रभावक रेखाएँ; यश-रेखा से संबंधित नूतन तथ्य; फल-विवेचन; निष्कर्ष ।

### ११. भाग्य-रेखा

१२४—१३८

सामान्य परिचय; भाग्य-रेखा के संकेत ; भाग्य-रेखा के ग्यारह उद्गम-स्थल, संबंधित जानकारी तथा फल-विवेचन ; भाग्य-रेखा पर पाये जाने वाले विशेष चिह्न ; फलादेश ; भाग्य-रेखा तथा प्रभावक रेखाएँ ; भाग्य-रेखा से संबंधित कुछ तथ्य ; फलादेश ; निष्कर्ष ।

### १२. स्वास्थ्य-रेखा

१३९—१४५

सामान्य परिचय ; स्वास्थ्य-रेखा के उद्गम व अवसान-स्थल ; स्वास्थ्य-रेखा पर पाये जाने वाले चिह्न तथा संबंधित फल-विवेचन ; स्वास्थ्य-रेखा तथा विभिन्न रोग ; स्वास्थ्य-रेखा से संबंधित नूतन तथ्य ; फलादेश ; निष्कर्ष ।

### १३. विवाह-रेखा

१४५—१५३

सामान्य परिचय; विवाह-रेखा तथा प्रणय रेखा; प्रेम-रेखा तथा विलास-रेखा; विवाह-रेखा का उद्गम व फल; विवाह-रेखा पर पाए जाने वाले चिह्न तथा फल-विवेचन ; विवाह-रेखा से संबंधित नूतन तथ्य तथा फलादेश ; सन्तान-रेखा ; विवाह-आयु निकालने का तरीका ; निष्कर्ष ।



## १४. गौण-रेखाएँ

१५३—१६६

सामान्य परिचय ; गौण रेखाओं का हस्तरेखा-विशेषज्ञ के लिए महत्त्व ; प्रमुख रेखाएँ—मंगल-रेखा ; गुरु-वलय ; शनि वलय ; रवि-वलय ; शुक्र वलय ; चन्द्र-रेखा ; प्रभावक रेखाएँ ; यात्रा-रेखाएँ ; विज्ञान रेखाएँ ; विद्या-रेखा ; भ्रातृ-भगिनी-रेखा ; मित्र-रेखाएँ ; आकस्मिक रेखाएँ ; सुमन-रेखा ; मणिवन्ध-रेखाएँ ; शुक्र-रेखाएँ ; रहस्य क्राँस ; बुध-वलय ; दुर्घटना-रेखाएँ ; त्रिकोण ; आयत ; प्रत्येक गौण-रेखा का परिचय तथा सम्बन्धित फल-विवेचन ; निष्कर्ष ।

## १५. हस्त-चिह्न

१६६—१८५

हाथ पर पाये जाने वाले प्रमुख चिह्न तथा उनका प्रभाव । मुख्य चिह्न—त्रिभुज, क्राँस, बिन्दु, वृत्त, द्वीप, वर्ग, जाल, नक्षत्र या तारा ; प्रत्येक चिह्न का परिचय, तथा हथेली में विभिन्न स्थानों पर विभिन्न फल-विवेचन ; चिह्न से संबंधित विशेष तथ्य ; निष्कर्ष ।

## १६. विशेष योग

१८५—१८६

हथेली में पाये जाने वाले विशेष योग ; राज्य योग ; लक्ष्मी-योग ; प्रधान योग ; प्रचण्ड योग ; राज्याधिकारी योग ; कूटनीतिज्ञ योग ; कमिश्नर योग ; अधिकारी योग ; न्यायाधीश योग ; कानून योग ; ब्रह्म-योग ; साधु योग ; महापुरुष योग ; ज्योतिषी योग ; साहित्यज्ञ योग ; चिकित्सक योग ; महालक्ष्मी योग ; कृषि योग ; प्रसिद्धि योग ; विज्ञान-योग ; कलाकार योग ; संगीत योग ; दीर्घायु योग ; भाग्योन्नति योग ; पतिव्रता योग ; पराक्रमयोग ; शत्रुयोग ; तस्कर योग ; स्वार्थी योग ; प्रणय योग ; व्यभिचारी योग ; अकाल मृत्यु योग ; भ्रातृहन्ता योग ; संपत्तिनाश योग ; कमल योग प्रत्येक योग का फल-विवेचन ; निष्कर्ष ।

## १७. काल-निर्धारण

१८६—१८४

हथेली पर पाई जाने वाली रेखाएँ तथा परिचय ; प्रत्येक रेखा का समय निर्धारण करना ; ध्रुवांक निकालना ; ध्रुवांक से जीवन



की भावी घटनाओं का सही-सही समय निकालना ; निष्कर्ष ।

## १८. हस्तचित्र लेने की रीति

१६६—२१०

हस्तचित्र लेने का सही प्रकार ; साधनानियाँ ; कपूर के धुएँ द्वारा चित्र उतारना ; प्रेस की स्याही द्वारा चित्र उतारना ; फोटो द्वारा चित्र लेना ; विधियाँ ; विवेचन ।

## १९. हस्तरेखाओं से जन्म-तारीख व जन्म-समय निकालना

१६६—२०४

हस्त-रेखाओं से जन्म-संवत् निकालना ; जन्म-मास-निर्णय ; भारतीय मास या अंग्रेजी तारीख निकालना ; पक्ष-ज्ञान ; जन्म-तिथि-ज्ञान ; जन्म-वार-ज्ञान ; जन्म-समय-ज्ञान ; सही विवेचन ।

## २०. नष्ट जन्मपत्र बनाना

२०५—२०८

हथेली पर राशियों का परिचय तथा उनका स्थान-ज्ञान ; रेखाओं द्वारा ग्रहों का स्वरूप-ज्ञान ; राशियों तथा ग्रहों का संगोग ; जन्मलग्न निकालना ; जन्म-कुण्डली में समस्त ग्रहों का स्थान-निर्धारण ; ग्रह-अंश निकालना ; विवेचन व निष्कर्ष ।

## २१. पंचांगुली देवी

२०८—२०९

हाथ की अधिष्ठात्री पंचांगुली देवी ; उसका परिचय ; उसके पूजन की विधि ; उसका ध्यान ; उसका मूल मंत्र ; मंत्र साधने का प्रकार ; प्रयोग व फल ; निष्कर्ष ।

## उपसंहार

२१०—२११

आप और आपका सामर्थ्य ; उद्बोधन ।



## प्रवेश

सामुद्रिक ज्योतिष मानव की वे प्रारंभिक वैज्ञानिक उपलब्धियाँ हैं, जो उसे सभ्यता के प्रथम चरण में ही प्राप्त हुईं। मानव-मन सतत जिज्ञासाशील रहा है, और यह जिज्ञासा-भावना ही उसे बवंर युग से बणुयुग में ला सकने में समर्थ हुई है। अँधेरे और अज्ञान में भटकने वाला यह आदि मानव आज सभ्यता एवं वैज्ञानिक उपलब्धियों के उस छोर पर जा खड़ा हुआ है जहाँ वह चन्द्रमा, मंगल और बृहस्पति के लोकों को भी नापने में समर्थ हो सका है।

मनुष्य और पशु के बीच विभाजक रेखा उसका विवेक है। जहाँ यह विवेक छूटा, वहाँ मनुष्य और पशु में कोई भेद नहीं रह जाता क्योंकि भूख, काम और निद्रा ऐसी सहज क्रियाएँ हैं, जो दोनों में समान रूप से पाई जाती हैं; परन्तु बुद्धि या मस्तिष्क ही एक ऐसी विशेषता मनुष्य के पास है, जिससे वह निरन्तर ऊपर-ही-ऊपर उठता गया है।

हथेली पर पाई जाने वाली रेखाएँ इसी मस्तिष्क का क्रियात्मक रूप हैं, उसका सांकेतिक रेखांकन हैं। जिस प्रकार मस्तिष्क जीवन एवं विश्व के घात-प्रतिघातों को ग्रहण करता रहता है, ठीक उसी रूप में उसका रेखांकन हथेली पर होता रहता है। यद्यपि यह परिवर्तन इतना सूक्ष्म होता है कि सहज ही देख पाना सम्भव नहीं, परन्तु दक्ष एवं अनुभवी रेखाविद् इस परिवर्तन को भी पहचान लेते हैं, और सही-सही फलादेश कह सकने में समर्थ होते हैं।

बालक जब जन्म लेता है, तो उसके हाथ की रेखाएँ अस्त-व्यस्त, विरल और अस्पष्ट-सी होती हैं; साथ ही उसकी मुट्ठियाँ भी बंद रहती हैं, परन्तु फिर भी, उसकी हथेली में भी तीन रेखाएँ—हृदय-रेखा,



मानस-रेखा और जीवन-रेखा—स्पष्ट होती हैं। आश्चर्य की बात तो यह है कि ये तीनों रेखाएँ तर्जनी के मूल भाग के पास से होकर गुजरती हैं, अर्थात् तर्जनी का मूल भाग वह केन्द्र है, जो इन सबको संचालित करता रहता है। वस्तुतः यह केन्द्र विश्व-भौतिकी ऊर्जा को अपने-आप में स्वीकारता हुआ, ग्रहण कर पूरी हथेली में फैला देता है और अपना वृत्त पूरा करके पुनः उसी केन्द्र पर पुञ्जीभूत हो जाता है। इसी ऊर्जा को कुछ विद्वान् चिन्मय तत्त्व, कुछ ईश्वर, कुछ विद्युत् तो कुछ ग्रह-रश्मियाँ बताते हैं, यह है वही प्राणदायिनी शक्ति जो पूरे जीवन को संचालित करती है।

पाश्चात्य विद्वान् डब्ल्यू० जी० बेनहम ने उपर्युक्त तथ्य को वैज्ञानिक रूप देते हुए बताया है कि बच्चा माँ के गर्भ में सक्रिय रूप में नहीं रहता, परन्तु ज्योंही वह जन्म लेता है, और बाह्य सांसारिक वातावरण में प्रवेश करता है, वह स्वयमेव स्वतन्त्र इकाई बन जाता है। इसी क्षण से बालक का मस्तिष्क क्रियाशील हो जाता है, और उसके साथ-ही-साथ उसका रक्त-संचालन भी प्रारम्भ हो जाता है। इन दोनों क्रियाओं—मस्तिष्क का क्रियाशील होना, और शरीर में स्वस्थ रक्त का संचालन—का सीधा प्रभाव शरीर के अन्य अवयवों पर भी पड़ता है। फलस्वरूप वेगतिवान् हो उठते हैं और यही कारण है कि शनैः-शनैः सर्व-प्रथम उसकी बन्द मुट्ठियाँ खुल जाती हैं। इसी क्षण से मस्तिष्क से जीवनी शक्ति के प्रभावानुरूप हथेली पर रेखाओं का उदय होता है, और वे प्रबल तथा पुष्ट होने की दिशा में अग्रसर होती हैं।

अत्यन्त प्रारम्भिक अवस्थामें बालक का व्यवहार पशुवत् ही होता है—सोना, जागना और खाना, ये तीन क्रियाएँ ही मुख्य रूप में रहती हैं। इन दिनों वह किसी भी वैचारिक अवस्था में नहीं होता, परन्तु धीरे-धीरे अभ्यास एवं वातावरण से वह समझने लगता है; भले-बुरे की पहचान करने लगता है; अपने-पराये का ज्ञान होता है, और स्थितियों के अनुरूप हँसने-रौने की क्रियाओं में आगे बढ़ता है। इसके साथ-ही-साथ उसकी हथेली की रेखाएँ भी पुष्टता एवं स्पष्ट रूप ग्रहण करने लगती हैं।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि हथेली की रेखाएँ परिवर्तनशील



हैं। ज्यों-ज्यों मानसिक प्रवृत्तियों में स्थिरता आने लगती है, त्यों-त्यों उसकी रेखाओं में भी स्थिरता का आभास होने लगता है। अतः ज्योतिष में गणित की तरह निश्चितता नहीं रहती। मस्तिष्क में प्रवृत्तियों की तीव्रता के अनुसार रेखाओं का रूप भी बदलता रहता है, अतः काफी दूर की भविष्यवाणियाँ करना हस्तरेखाविद् के लिए संभव नहीं। इस दृष्टि से देखा जाय, तो सामुद्रिक शास्त्र गणित की निश्चितता की अपेक्षा मनोविज्ञान के अधिक निकट है। सोचने और तदनुसार कार्य करने से रेखाओं में परिवर्तन संभव है। वय-प्राप्ति के साथ-साथ पुरानी रेखाएँ मिट जाती हैं, या बदलकर नया रूप धारण कर लेती हैं। कुछ विद्वान् मानते हैं कि सात वर्षों में हथेली की रेखाओं में पूर्णतः परिवर्तन आ जाता है; परन्तु मेरे अनुभव के अनुसार हथेली की रेखाओं में निरन्तर पल-प्रतिपल परिवर्तन होता रहता है, और कुछ महीनों या दिनों में भी रेखाओं में परिवर्तन स्पष्ट देखा जा सकता है।

पूरी हथेली में तीन रेखाएँ ऐसी हैं, जो अपरिवर्तित रहती हैं। हृदय, मानस और जीवन-रेखा पर परिवर्तन का कोई प्रभाव दृष्टि-भोजर नहीं होता, क्योंकि मूलतः व्यक्तित्व के कुछ तत्त्व जन्मजात और वंशानुक्रम से पैतृक होते हैं। हाँ, इन रेखाओं को प्रभावित करने वाली सहायक रेखाएँ बनती और बिगड़ती रहती हैं।

जैसा कि मैं ऊपर कह चुका हूँ, एक कुशल हस्तरेखाविद् के लिए ही मनोविज्ञान का ज्ञान होना अत्यन्त आवश्यक है, साथ ही हाथ का अध्ययन करते समय आपकी दृष्टि वैज्ञानिक विवेचना से युक्त हो। व्यक्तित्व की कोई भी चेष्टा अकारण नहीं होती, क्योंकि प्रत्येक चेष्टा के पीछे संवेग होते हैं। यद्यपि वातावरण, शिक्षा एवं संस्कृति के फल-स्वरूप संवेगों में परिष्कार होता है, फिर भी संवेग अपनी मूलभूत विशेषता अपने-आप में सँजोये रहते हैं, और मनुष्य इन्हीं संवेगों का पुञ्जीभूत स्वरूप है। मनुष्य की प्रत्येक चेष्टा भूत, भविष्य या वर्तमान से सम्बन्धित होती है, और इन्हीं संवेगों के स्वरूप का सही ज्ञान प्राप्त कर यदि हथेली की रेखाएँ पढ़ी जायँ, तो फलित शत-प्रतिशत सही उतरता है। मनुष्य में अपार संभावनाएँ हैं; अकल्पित क्षमताएँ हैं। एक कुशल हस्तरेखाविद् को चाहिये कि वह उन क्षमताओं का पता



समझावे, उनकी सम्भावनाओं को पहचाने और उनमें छिपी शक्तियों को जागृति करे। हस्तरेखा-विशेषज्ञ को केवल पंडित ही नहीं होना चाहिये, अपितु उसका व्यवहार एक मित्र और सलाहकार के अनुसार होना चाहिये। अशुभ के प्रति सचेत करते हुए भी मंगल एवं शुभ के प्रति आशान्वित भी करिये। संभावित विपत्तियों की जानकारी देते हुए उसके साहस एवं क्षमताओं को भी उजागर करिये। उसे मात्र भाग्यवादी ही न बनाएँ, अपितु कर्मक्षेत्र में संघर्षरत बनने योग्य उसका निर्माण करिये। यही आपकी सफलता है, आपकी विशेषता है।

अन्त में, जबकि हम हथेली और रेखाओं का ज्ञान प्राप्त करने की दिशा में बढ़ें, कुछ ऐसी बातें हैं, जिनका पालन करना हमारे लिए आवश्यक है। अपने अनुभव के आधार पर मैं कुछ ऐसे बिन्दु प्रस्तुत कर रहा हूँ, जिनका पालन पाठकों की सफलता के लिए आवश्यक है।

- (१) कभी भी उतावली में या बिना सोचे-समझे तुरन्त ही कोई भी निर्णय न दें। किसी भी एक चिह्न को देखकर तुरन्त फलाफल कह देना शुभ नहीं, क्योंकि कोई भी अकेला चिह्न पूरी हथेली का प्रतिनिधित्व नहीं करता। हथेली का सर्वांगीण अध्ययन करके ही फलादेश कहना विज्ञान-सम्मत है।
- (२) यथासम्भव विरोधाभास से बचें। कभी-कभी हाथ में एक ही तथ्य को उजागर करने वाली शुभ और अशुभ दोनों ही रेखाएँ दिखाई देती हैं। ऐसी स्थिति में उस रेखा का उद्गम और उसकी सहायक रेखाओं का अध्ययन करके ही फलादेश कहना उचित है।
- (३) यदि हाथ की रेखाओं में बुरे तथ्य दिखाई दे रहे हों तो उन्हें भी चौकाने वाले ढंग से न कहिये, क्योंकि इससे सामने वाले पर मनोवैज्ञानिक रूप से बुरा असर पड़ता है; यदि कमजोर हृदय का व्यक्ति हो, तो उसके लिए अप्रिय सूचना सह पाना भी कठिन होता है। ऐसे तथ्य कहने से पूर्व हस्तरेखाविद् को चाहिए कि वह धीरे-धीरे सामनेवाले को तैयार करे, उसका मानस दृढ़ करे और फिर उसे कहे, साथ ही यह आश्वासन भी दे कि यदि इच्छाशक्ति प्रबल रही, तो यह अप्रिय तथ्य टल भी सकता है, अथवा इसका प्रभाव न्यून भी हो सकता है।



किसी एकाग्र पुस्तक को पढ़कर ही अपने-आपको पंडित मत समझिये ! रेखाओं का सिद्धान्त समझने के साथ-साथ उसका व्यावहारिक ज्ञान भी परमावश्यक है। बाजार में जो इस विषय में पुस्तकें उपलब्ध हैं, उनमें से मुझे कोई भी पुस्तक प्रामाणिक नजर नहीं आती। अधिकतर ऐसी पुस्तकें या तो अनुवादमात्र हैं, अथवा पाश्चात्य ज्योतिर्विदों का पिष्टपेषण। न तो वे परिश्रम से अध्ययन और अनुभव करते हैं, और न ही अनुभव को लेखनी से व्यक्त करते हैं। कीरो, सैंट् जारमन, वेन्थम, नोएल जेक्विन आदि हस्तरखा-विशेषज्ञों की पुस्तकें बाजार में उपलब्ध हैं, परन्तु इनमें से भी कोई पूर्णतया प्रामाणिक नहीं; अनुभव का अभाव इनमें भी दृष्टिगोचर होता है।

मैंने जीवन में हजारों नहीं लाखों हाथ देखे हैं, लाखों हाथों के प्रिंटों का अध्ययन किया है; इसमें स्वदेश तथा विदेश सभी जगह के व्यक्ति हैं, तथा समाज के सभी स्तर एवं श्रेणी के लोगों के हाथ देखने का अवसर मिला है, और समय-समय पर मैंने जो भविष्यवाणियाँ की हैं, वे शत-प्रतिशत ही उतरी हैं। पाठक देखेंगे कि अन्य पुस्तकों की अपेक्षा इस पुस्तक में कुछ नवीनता है, व्यावहारिक ज्ञान का अनुभव इसमें विद्यमान है, और विषय का विवेचन वैज्ञानिक पद्धति पर करके विषय को बोधगम्य बनाने की ओर प्रयत्न किया है।

हस्तरखा-जिज्ञासुओं को चाहिए कि वे सिद्धान्तरूप में रेखाओं का ज्ञान प्राप्त करें, और फिर व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करें, तभी वे फलादेश कह सकने में समर्थ होंगे और उनकी वाणी कालयजी बन सकेगी।

२

## हाथ

कसाई की सीमा पर मणिबन्ध-रेखाओं से आगे उँगलियों के छोर तक का भाग हाथ कहलाता है और यही भाग हस्तरखा के अध्ययन



का विषय है। इसके सिरे पर छोटी-छोटी हड्डियों से निर्मित उँगलिया होती हैं। इस क्षेत्र को 'मेटाटारसस' भी कहा जाता है। यह पूरा क्षेत्र, इस पर निर्मित प्रत्येक रेखा, बारीक जाल, तन्तु, उभरा और दबा हुआ भाग तथा उँगलियों की केश-सूक्ष्म-रेखाएँ भी हमारे अध्ययन का विषय हैं, अतः हथेली का अध्ययन करते समय पूरी सावधानी बरतना परमावश्यक है।

**त्वचा—**हथेली की त्वचा, लचक और रंग, निर्णय तक पहुँचाने में काफी सहायता प्रदान करते हैं। आप किसी का भी हाथ ज्योंही अपने हाथ में लेते हैं, आपका पहला अनुभव स्पर्शात्मक होता है। त्वचा व्यक्ति की नैसर्गिक प्रवृत्ति बताने में सक्षम होती है। यदि हाथ कर्कश, भारी और कठोर हो तो आप एक ऐसे व्यक्ति के सामने हैं, जो पाशविक वृत्तियों से प्रभावित है; उसका जीवन आदिम संवेगों से संचालित है। उसके व्यवहार, कार्य और चरित्र में भी एक प्रकार का खुरदरापन होगा; उसमें सजीके का अभाव होगा, तथा मुँहफट होने के साथ-साथ कर्कश व्यक्तित्व वाला होगा। ये वे व्यक्ति होते हैं, जो जीवन-यापन के लिए कठोर परिश्रम करते हैं; संवेदनाओं की अपेक्षा मूल संस्कारों से अधिक बँधे हुए होते हैं।

इसके विपरीत कुछ व्यक्तियों की हथेलियाँ नर्म, लचकदार और लालिमा लिये हुए होती हैं। ऐसे व्यक्ति पूर्णतः आत्मकेन्द्रित होते हैं। जीवन के कठोर संघर्षों का मुकाबिला करने से ये घबराते हैं। कल्पना के क्षेत्र में विचरण करने वाले ये लोग शारीरिक श्रम की अपेक्षा मानसिक श्रम में ही ज्यादा विश्वास करते हैं। ये जीवन में ऐश्वर्यता चाहते हैं; इनकी अभिरुचि उन्नत होती है, पर ये कठोर श्रम नहीं कर सकते।

कुछ त्वचाएँ इन दोनों का सम्मिश्रण-सा लिये हुए होती हैं, जो न अधिक कठोर होती हैं, और न अधिक लचीली और नर्म। ऐसे व्यक्ति जीवन में सफलता के सन्निकट कहे जा सकते हैं। इनमें व्यावहारिकता एवं कल्पनाशीलता का अद्भुत सम्मिश्रण होता है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में ये सफलता के द्वार पर दस्तक देने में प्रवृत्त रहते हैं। इनके निर्णय विवेकपूर्ण तथा कार्य में स्वच्छता एवं सुघड़ता होती है।







हथेली का रंग भी मानव के आन्तरिक जीवन का प्रतिबिम्ब होता है। हथेली को अपने दोनों हाथों में लेकर थोड़ी-सी शक्ति के साथ दबाकर छोड़ दीजिये। दो-तीन बार ऐसा करिये, आप देखेंगे कि हथेली का रंग अपनी स्वाभाविक स्थिति में आ गया है। यही वह स्थिति है, जबकि आप स्पष्ट रूप से हथेली का रंग, त्वचा, उसकी मांसपेशियों की नमी, कड़ाई और मांसलता का अनुभव कर सकते हैं।

एक प्रकार से हथेली का रंग मानव के सामान्य रक्त-प्रवाह का द्योतक है। जिन हथेलियों का रंग ललाई लिये हुए नहीं होता, वे व्यक्ति निश्चय ही शारीरिक एवं मानसिक रूप से दुर्बल एवं रुग्ण होते हैं। उनकी हथेलियाँ ठंडी-सी होती हैं और ये एक प्रकार के रहस्य का लबादा ओढ़े हुए रहते हैं।

गुलाबी हथेली स्वस्थता एवं नीरोगिता की दिग्दर्शक है। ऐसे व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक, दोनों ही दृष्टियों से स्वस्थ कहे जा सकते हैं। इनमें समस्त मानवोचित गुण—क्षमा, दया, धैर्य, ममत्व, प्रेम, स्नेह—पाये जाते हैं। जीवन को ये एक खेल की तरह समझते हैं, और बाधाओं तथा संकटों का हँसकर सामना करते हैं। जीवन के प्रति इनमें ललक और गर्मजोशी होती है तथा प्रत्येक कार्य के प्रति जिज्ञासा की भावना रखते हैं। ये स्वभाव से हँसमुख, मिलनसार और समाज में घुल-मिलकर जीने वाले होते हैं।

परन्तु अत्यधिक गुलाबी या लाल हथेलियाँ स्वस्थता की परिचायक नहीं। ऐसे व्यक्ति उतावले होते हैं। किसी भी कार्य का आरम्भ तो ये शान से कर लेते हैं, पर कुछ ही समय बाद ये उससे ऊब जाते हैं और येन-केन-प्रकारेण कार्य को निबटाने की फिराक में रहते हैं। इनके जीवन और कार्य—प्रत्येक क्षेत्र में व्यर्थ की उतावली और हड़-बड़ी-सी बनी रहती है।

पीली हथेलियाँ व्यक्ति के शरीर में पित्त की अधिकता स्पष्ट करती हैं। ऐसे व्यक्ति स्पष्टतः निराशावादी होते हैं। प्रत्येक कार्य का अन्ध-कार-पक्ष ये पहले देखते हैं; जीवन के प्रति एक प्रकार से विरक्ति इनमें बनी रहती है। उदास, थके-थके-से तथा उचटे हुए स्वभाव के ये व्यक्ति जीवन में प्रायः असफल ही देखे गए हैं।



नीली या बैंगनी रंग की हथेलियाँ अशुद्ध रक्त-प्रवाह की चेतक हैं। ऐसे व्यक्ति बीमार, आत्मकेन्द्रित, उदास, चिड़चिड़े और निराशावादी प्रवृत्ति-प्रधान होते हैं। जीवन इन्हें बोझ-सा लगता है और किसी प्रकार उसे ढोना ही अपने कर्तव्य की इतिश्री समझते हैं।

हथेली में कई जगह हड्डियों के जोड़ हैं। इन जोड़ों को भी ध्यानपूर्वक देखना चाहिए। यदि ये जोड़ लचकदार होते हैं, तो व्यक्ति संतुलित दिमाग का समझना चाहिए। विपरीत परिस्थितियों में भी अपने-आपको ढालने की उसमें क्षमता होती है। वे या संकटों एवं बाधाओं के बीच से भी वह हँसकर आगे बढ़ जाता है।

हाथ की बनावट—पवतों एवं आकृति की संरचना के आधार पर समस्त मानवों की हथेलियाँ सात वर्गों में बाँटी जा सकती हैं। हथेली के पीछे की तरफ से स्वाभाविक स्थिति में रखकर यदि ध्यानपूर्वक देखा जाय, तो ये वर्ग आसानी से समझ में आ सकते हैं। वे सात प्रकार हैं—

१. प्रारम्भिक प्रकार (Elementary type)
२. वर्गाकार हाथ (Square type)
३. दार्शनिक हाथ (Philosophical type)
४. कर्मठ हाथ (Spatulate type)
५. कलात्मक हाथ (Conic of Artistic type)
६. आदर्श हाथ (Psychic of Idealistic type)
७. मिश्रित हाथ (Mixed type)

वास्तविक रूप में देखा जाय, तो हाथों की बनावट मुख्यतः तीन प्रकार की होती है, परन्तु सुविधा के लिए आधुनिक हस्तरेखा-विदों ने इसे फँबाकर सात वर्गों में बाँट लिया है। वस्तुतः हाथ होते हैं—

१. सात्विक, २. राजस, और ३. तामस। परन्तु शुद्धरूप में इन तीनों में से कोई भी हाथ दृष्टिगोचर नहीं होगा, क्योंकि वर्ण-व्यवस्था तथा दूषित चरित्रों के फलस्वरूप अधिकतर मिश्रित हाथ ही दिखाई देते हैं। यदि इस त्रिगुणात्मक प्रकृति का प्रसारित रूप देखें, तो भी हाथों के सात वर्ग बनते हैं, जोकि इस प्रकार से हो सकते हैं—

१. सात्विक।



२. राजस ।
३. तामस ।
४. सात्विक-राजस मिश्रित ।
५. राजस-तामस मिश्रित ।
६. तामस-सात्विक मिश्रित ।
७. सात्विक-राजस-तामस मिश्रित ।

वस्तुतः जिस प्रकार से चेहरा मानव-हृदय का प्रतिबिम्ब होता है, ठीक उसी प्रकार किसी भी व्यक्ति की हथेली उसके पूर्ण जीवन को खोलकर सामने रख देती है । परन्तु आवश्यकता है अभ्यास एवं लगन की; निरन्तर अभ्यास के बाद तो हथेली, उसकी आकृति और संरचना देखकर ही उस व्यक्ति के बारे में बहुत-कुछ कहा जा सकता है ।

पाठकों की सुविधा के लिए पहले निर्देशित सात प्रकार के हस्त-भेदों का संक्षेप में वर्णन प्रस्तुत किया जाता है—

१. प्रारम्भिक प्रकार (Elementary type)—प्रारम्भिक रूप में कहा जाने वाला यह हाथ खुरदुरा एवं भारी होता है । यह हाथ लगभग उस अवस्था का परिचायक है, जब आदिमानव पशुजन्य जीवन से ऊपर उठने की ओर चेष्टारत था । इस प्रकार के हाथ की बनावट बेडौल होती है, उँगलियाँ छोटी और घने केशों से गुम्फित होती हैं । ये व्यक्ति स्पष्टतः पशु एवं मानव की संघि-रेखा पर ही होते हैं । सभ्यता के विकास का प्रारम्भिक चरण इनमें पाया जाता है; जीवन में संस्कृति की अपेक्षा सभ्यता की नकल करने में प्रवृत्त रहते हैं । भोजन, वस्त्र और आवास, इन तीन आयामों से ही घिरे रहते हैं; इसके आगे बढ़कर न तो ये देखने की चिन्ता करते हैं, और न देख ही पाते हैं । श्रम ये करना चाहते नहीं; बुद्धि का प्रयोग इनके बश की बात नहीं होती । अधिकतर अपराधी-वर्ग का हाथ इसी कोटि में आता है ।

२. वर्गाकार हाथ (Square type)—ऐसा हाथ जो स्पष्टतः जाना जा सकता है । हथेली की बनावट न्यूनाधिक रूप में चौकोर वर्ग की तरह होती है । इस प्रकार की हथेली में सावधानीपूर्वक एक



# हाथों का वर्गीकरण



(१) प्रारंभिक प्रकार



(२) वर्गीकार हाथ



(३) दार्शनिक हाथ



(४) कर्मठ हाथ







You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



# हाथों का वर्गीकरण



(५) कलात्मक हाथ



(७) मिश्रित हाथ



(६) आदर्श हाथ





व्यावहारिक दृष्टि से ये सफल नहीं होते, क्योंकि ये अधिकतर भावना एवं कल्पना में ही खोये रहते हैं; आर्थिक चिन्ता इन्हें बराबर बनी रहती है; स्वभाव में लापरवाही रहती है।

यदि कलात्मक हाथ अत्यधिक लचीला न होकर थोड़ा कड़ाई लिये हुए हो तो ऐसे व्यक्ति अपनी कला के द्वारा अर्थ-संचय भी करते हैं, तथा इस क्षेत्र में भी सफल होते हैं।

६. आदर्श हाथ (Psychic of Idealistic type)—आदर्श हाथ का तात्पर्य है एक ऐसा हाथ, जिसका गठन सुढोख, त्वचा का रंग गुलाबी तथा मुद्रायाम एवं उँगलियाँ समानानुपातिक हों। परन्तु इस नाम से इस भ्रम में नहीं रहना चाहिए कि ये ही हाथ सर्वोत्कृष्ट होते हैं। हाँ, ऐसे हाथों के धनी उन्नत एवं उर्वर मस्तिष्क रखने वाले होते हैं। इनके जीवन की यह विशेषता रहती है कि जिस क्षेत्र को भी चुनेंगे, उसमें अन्दर तक पहुँचने की कोशिश करेंगे। दास की खाल निकालना इनका स्वभाव होता है। प्रत्येक कार्य में अति इन्हें समाज में तिरस्कृत भी करती है, परन्तु फिर भी ये अपनी ही धुन में मस्त सततः अपने लक्ष्य की ओर गतिशील रहते हैं। जीवन के कठोर संघर्षों का मुकाबिला करने में अक्षम रहते हैं। स्वप्न और आदर्शों में विचरण करनेवाले ऐसे व्यक्ति सांसारिक कार्यों में बिल्कुल कोरे होते हैं तथा समाज की दृष्टि से 'मिसफिट' कहे जाते हैं। पास में द्रव्य रहने पर राजसी ठाठ-बाट से रहने लग जाते हैं, और द्रव्य समाप्त होने पर फ्रायों पर भी गुजारा करने में नहीं हिचकिचाते। एक प्रकार से इनका जीवन राजसी ठाठ-बाट तथा फ्रायों के बीच ही गुजरता है।

इस भौतिक विश्व में ये सफल नहीं होते, फलतः इनका अन्त दुःखद होता है। जीवन के अन्तिम वर्षों में इन्हें बार-बार असफलताओं का सामना करते रहना पड़ता है।

यदि आर्थिक दृष्टि से इनकी चिन्ता मिट जाय, तो ऐसे व्यक्ति समाज को कुछ विशेष देन दे सकते हैं।

७. मिश्रित हाथ (Mixed type)—हाथ का अन्तिम वर्ग मिश्रित टाइप कहलाता है। पहले छः वर्गों में यह किसी भी वर्ग में नहीं आता, अपितु इस हाथ में एक से अधिक वर्गों का सम्मिश्रण पाया



जाता है। यदि हथेली किसी एक वर्ग की होती है, तो उँगलियाँ किसी दूसरे ही वर्ग की। इसी प्रकार हथेली और उँगलियों को सावधानी-पूर्वक देखने से पता चल सकता है कि इस हाथ में किस वर्ग का कितना मिश्रण है।

यह मिश्रण उनके गुणों एवं चरित्र में भी पाया जाता है। इनका व्यक्तित्व प्रभावहीन होता है, तथा प्रत्येक कार्य को उदासीनता की दृष्टि से ही देखते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में कम सफल देखे गये हैं।

ऐसे व्यक्तियों का चित्त अस्थिर होता है; प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ कर भविष्य में न होने की आशंका से उन्हें बीच में ही छोड़ देते हैं। धीरे-धीरे यह इनका स्वाभाविक गुण हो जाता है जिससे इन्हें निरन्तर असफलताओं का सामना करते रहना पड़ता है। परिणामस्वरूप जीवन में निराशावादी प्रवृत्ति का बाहुल्य रहता है, तथा सफलता के लिए कठोर संघर्ष करते रहना पड़ता है।

२

## अंगूठा, उँगलियाँ और नाखून

जिस प्रकार मुखाकृति किसी भी व्यक्ति के जीवन का प्रतिबिम्ब होती है, ठीक उसी प्रकार हाथ भी उसके अन्तस्थल का एकमात्र जीता-जागता चित्र होता है। हाथ में भी उसकी बनावट, पर्वत-शिखरों का उभार-दबाव तथा उँगलियों की रचना देखने के साथ-साथ अंगूठे का अध्ययन भी विशेष महत्त्व रखता है। पूरे हाथ का मूल अंगूठा माना गया है, क्योंकि बिना अंगूठे के उँगलियों का महत्त्व नगण्य-सा हो जाता है। अंगूठा ही हाथ से कार्य करते समय समस्त शरीर की शक्ति को एकत्र कर कार्य करने की क्षमता प्रदान करता है। बच्चे के जन्म के समय भी अंगूठा चारों उँगलियों से आवद्ध रहता है, अतः हस्तरेखा-विशेषज्ञों के लिए अंगूठे का अध्ययन सर्वोपरि माना गया है।



अंगूठा नैसर्गिक इच्छाशक्ति का केन्द्र होता है, जोकि तीन अस्थि-खण्डों से मिलकर निर्मित होता है। हथेली से आगे निकले हुए दो भाग और तीसरा जो हथेली की आन्तरिक संरचना करता है, मिलकर अंगूठे का निर्माण करते हैं। अंगूठे का मूल शुक्र पर्वत है, जोकि प्रेम और वासना का केन्द्र है। इससे ऊपर का पोर तर्क, तथा नाखून से सम्बंधित भाग इच्छाशक्ति का द्योतक है। चूंकि इच्छा मानव-जीवन का आधार-भूत तत्त्व है, अतः अंगूठे का अध्ययन हस्तरेखाविद् के लिए सतर्कता-पूर्वक करना परमावश्यक हो जाता है।

अंगूठा आन्तरिक क्रियाशीलता का पुञ्ज होता है, जिसका सीधा सम्बन्ध मस्तिष्क से होता है। चूंकि मस्तिष्क ही प्रत्येक कार्य-विचार का उदगम है, अतः केवल अंगूठा देखकर ही मनुष्य का स्वभाव, प्रकृति एवं विचारों का अध्ययन किया जा सकता है। चिकित्सा-विज्ञान के अनुसार भी यदि अंगूठा किसी कारणवश एकदम से फट जाय, और रक्त-प्रवाह जोरों से हो तो मनुष्य पागल हो सकता है और कभी-कभी तो उसकी मृत्यु भी हो जाती है। इस तथ्य से भी अंगूठे का महत्व आंका जा सकता है।

परिस्थितियों एवं जलवायु के अनुसार समस्त मानव-जाति के अंगूठे तीन भागों में बांटे जा सकते हैं—

- १—वे अंगूठे, जो हथेली पर तर्जनी के साथ अधिक कोण (Obtuse Angle) बनाते हैं।
- २—वे अंगूठे, जो हथेली पर तर्जनी के साथ समकोण (Right Angle) बनाते हैं।
- ३—वे अंगूठे, जो हथेली पर तर्जनी के साथ न्यून कोण (Acute Angle) बनाते हैं।

पाठकों की सुविधा के लिए इन तीनों प्रकार के अंगूठों का संक्षिप्त वर्णन प्रस्तुत किया जा रहा है—

१. अधिक कोण अंगूठा—ये अंगूठे देखने में सुन्दर आकृतिवाले, लम्बे तथा पतले होते हैं। ऐसे अंगूठों को सात्विक अंगूठों की संज्ञा दी गई है। ऐसे अंगूठे वाले व्यक्ति कोमल एवं मधुर हृदय रखनेवाले, विद्या-प्रेमी, कलाकार, संगीतज्ञ, हुनरमंद तथा कथाप्रेमी होते हैं। प्रारम्भिक



# अंगूठा

अधिकसित अंगूठा



दबे हुए अंगूठे



चौथे अंगूठे



एक सी लंबाई वाले-  
अंगूठे



कोणिक सिरे वाले अं.



वर्माकार सिरे वाले अं.



फैले सिरे वाले अं.



आयताकार इच्छासूचक  
वाले अंगूठे



संकरे नाखुन वाले  
अंगूठे





अवस्था में, विद्याध्ययन में इन्हें काफ़ी बाधाओं का सामना करना पड़ता है, परन्तु फिर भी ये घरेलू परिस्थितियों से ऊपर उठकर विद्यार्जन कर ही लेते हैं। निर्धनता इनके मार्ग में रोड़े अटकाती है, पर इनमें गजब की आत्मशक्ति होती है, जिसके बल पर ये जीवन में सफल हो जाते हैं।

अंगूठे की अत्यधिक लम्बाई अशुभ कही गई है। यदि अंगूठे की लम्बाई तर्जनी के दूसरे पोरुए के अर्धभाग से भी ऊपर बढ़ जाय तो ऐसा अंगूठा मूर्खता ही प्रदर्शित करता है। यदि अंगूठे की लम्बाई उचित अनुपात में होती है, तो ऐसे बालक मेधावी होते हैं, श्रेणी में अच्छा ढिवीजन प्राप्त करते हैं, तथा अन्य लोगों के साथ मधुर एवं सभ्यता-पूर्ण व्यवहार करते हैं। ऐसे व्यक्ति जीवन में सेवा को प्राथमिकता देते हैं, तथा कर्त्तव्य को सर्वोपरि समझते हैं।

मित्रों की संख्या इनके जीवन में अधिक होती है। चूँकि इनके हृदय में छल-कपट नहीं होता, अतः शत्रुओं की संख्या नगण्य ही होती है। चित्त में अस्थिरता बनी रहती है, तथा शंकालु प्रकृति के कारण समाज में उपहास के पात्र भी बनते हैं। ये जीवन में स्वयं के दर्द को अपने तक ही सीमित रखते हैं तथा अपने दुःख से दूसरों को दुःखी बनाने की चेष्टा नहीं करते। उद्यमप्रधान ऐसे व्यक्ति भाग्यवादी, अस्थिरमति, शंकालु एवं धार्मिक प्रवृत्ति-प्रधान होते हैं।

२. समकोण अंगूठा—ये वे अंगूठे होते हैं, जो तर्जनी से जुड़ते समय समकोण बनाते हैं। ये अंगूठे देखने में सुन्दर, मजबूत और स्तम्भवत् होते हैं। ऐसे अंगूठे पीछे की ओर झुके हुए नहीं होते। इन्हें रजोगुणी अंगूठे की संज्ञा दी गई है।

इन अंगूठों को देखने से ही पता चल जाता है कि ऐसे व्यक्ति परिश्रम पर ज्यादा विश्वास करते हैं। इनमें क्रोध की मात्रा विशेष होती है, परन्तु जितनी तेजी से क्रोध आता है, ठीक उसी गति से वह शान्त भी हो जाता है। क्रोधातिरेक में ये अनिष्ट या बिगाड़ नहीं करते। अपनी बात पर अड़ने वाले, हठी तथा प्रबल रूप से पक्षपाती होते हैं। ठीक बातों के साथ-साथ गलत कार्यों या बातों पर भी हठ पकड़ लेने पर ये अपने स्थान से नहीं हटते। प्रतिशोध की भावना इनमें इतनी



प्रबल होती है कि पीढ़ी दर-पीढ़ी ये वैर नहीं भूलते और मन में क्रोध संचित रखते हैं। ये या तो अच्छे मित्र होते हैं, या अच्छे शत्रु। बीचकी स्थिति इन्हें सहन नहीं होती। ये व्यक्ति दूट सकते हैं, पर मुकना इनके बस की बात नहीं होती।

ऐसे व्यक्ति सच्चे देशभक्त, प्रबल शरणागत और रूढ़िवादी होते हैं; यथासम्भव एहसान का बदला चुकाने में लगे रहते हैं; मन में एक बार जो निश्चय कर लेते हैं, उसे पूरा क्रिये बिना इन्हें चैन नहीं आता। स्वेच्छाचारी एवं स्वच्छ प्रकृतिप्रधान ऐसे व्यक्ति अपने द्वारा ही संचालित होते हैं।

३. न्यून कोण अंगूठा—हथेली से जुड़ते समय तर्जनी उँगली के साथ जो अंगूठे न्यून कोण बनाते हैं, वे इसी वर्ग के अन्तर्गत आते हैं। इनकी लम्बाई कम और बीच में से अपेक्षाकृत मोटे होते हैं। देखने में ये अंगूठे बेडौल-से लगते हैं। ऐसे अंगूठे तमोगुणी कहलाते हैं।

इस प्रकार के अंगूठे रखने वाले व्यक्ति जीवन में निराशावादी भावना पाले रहते हैं; आलस्य इनके जीवन को चारों ओर से घेरे रहता है। यात्रा करना इनकी रुचि में नहीं होता, और न जीवन में किसी कार्य की पूर्णता तक पहुँचते हैं। निम्न एवं मध्यवर्ग के लोगों में ऐसे ही अंगूठे प्रायः देखने को मिलेंगे। व्यसनों में रत ऐसे व्यक्ति जीवन में कर्ज में ही डूबे रहते हैं। फिजूलखर्ची तो इनके स्वभाव का अंग बन जाती है। अधिकतर दोस्तों में या चौपाल में बैठे गप्पें हाँकते रहते हैं, अथवा दिवास्वप्न देखते रहते हैं। तामसी प्रकृति-प्रधान ऐसे व्यक्ति जीवन में सफल नहीं कहे जा सकते। धर्म-कर्म में इनकी रुचि कम होती है, तथा भूत-प्रेत आदि की पूजा में विश्वास रखते हैं। म्लेच्छ एवं निम्नस्तरीय कार्यों में इन्हें आनन्द आता है।

इस प्रकार के हाथ में यदि अंगूठा छोटा और स्थूल हो तो वह व्यक्ति निश्चय ही भोगी होगा, तथा एक से अधिक स्त्रियों के साथ संभोग करने में प्रवृत्त होगा। अपने से निम्नस्तर अथवा निम्नजाति की स्त्री से इनका सम्पर्क रहेगा। मैंने अत्यन्त उच्च, समृद्ध एवं कुलीन घराने के कुछ बच्चों के हाथ तमोगुणी एवं छोटा अंगूठा देखा, और समय आने पर उन बालकों (व्यक्तियों) को शूद्र वर्ण के साथ सम्पर्क



स्थापित करते देखा। ऐसा अंगूठा डेर-सवेर बदनामी भी देता है। ऐसे व्यक्ति अपने समाज में हेय दृष्टि से देखे जाते हैं।

अंगूठे के तीन भाग—अंगूठा तीन भागों में बँटा होता है—पहला भाग या पोरुआ, जो नाखून से पिचका होता है; दूसरा मध्य भाग, तथा तीसरा वह भाग जो हथेली से शुक-पर्वत पर जुड़ा हुआ होता है। इनमें प्रथम पोरुआ सत्, दूसरा रज तथा तीसरा तम को द्योतित करता है। इन्हें हम ऊर्ध्वभाग, मध्यभाग तथा अधोभाग नाम से भी संबोधित कर सकते हैं। ऊर्ध्वभाग इच्छा, विज्ञान और Will का द्योतक है; मध्यभाग तर्क, विचार और Logic को बताता है, तथा तीसरा अधोभाग प्रेम, विराग और Love को सूचित करता है।

अंगूठे के इन तीनों भागों को समझ लेना भी हस्तरेखा-प्रेमियों के लिए परमावश्यक है।

प्रथम पोरुआ—जिस मनुष्य के अंगूठे का प्रथम पोरुआ दूसरे पोरुए से बड़ा हो, अर्थात् इच्छाशक्ति वाला भाग तर्क-भाग से बड़ा हो, उस व्यक्ति में तर्कशक्ति की अपेक्षा इच्छाशक्ति प्रबल होती है, तथा वह स्वतन्त्र निर्णय लेने वाला एवं मुक्त विचारों का स्वामी होता है। ऐसे व्यक्ति धार्मिक विचारों में गहरी आस्था रखने वाले होते हैं। इनका व्यक्तित्व इतना बलशाली होता है कि दूसरों को प्रभावित करने में ये सिद्धहस्त होते हैं। सैकड़ों और हजारों व्यक्तियों के विचारों को अपनी इच्छा के अनुकूल बना लेने में इन्हें कोई तकलीफ नहीं होती। ऐसा व्यक्ति यौवनावस्था की अपेक्षा वृद्धावस्था में अधिक संवेदनशील और धार्मिक हो जाता है।

यदि प्रथम पोरुए और दूसरे पोरुए की लम्बाई-मोटाई बराबर हो, तो यह व्यक्ति सम्माननीय एवं सफल जीवन व्यतीत करने वाला होता है। अपने प्रत्येक कार्य में ये व्यक्ति सफल होते हैं; न दूसरों को धोखा देना चाहते हैं, और न दूसरों द्वारा आसानी से ठगे ही जाते हैं; मित्रों की संख्या बढ़ी-चढ़ी रहती है, तथा समाज में लोकप्रिय होते हैं; जीवन की कठिन एवं विपरीत परिस्थितियों को भी ये हँसकर गुजार देते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिकांशतः जीवन में सफल ही होते हैं।

यदि प्रथम पोरुआ दूसरे पोरुए से छोटा हो, तो भी समझना



चाहिए कि व्यक्ति के विचारों पर तर्क हावी है। किसी भी कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करना इनके वश की बात नहीं होती। हृदय एवं विचारों से ये कमजोर होते हैं, तथा सम्पर्क में आने वाले प्रत्येक नर-नारी को संदेह की दृष्टि से देखते हैं। शारीरिक एवं मानसिक दुर्बलता के कारण ऐसे व्यक्तियों का जीवन अधिकांशतः असफल ही देखा गया है।

प्रथम पोरुआ लम्बा, सुडौल, दृढ़ तथा सुन्दर आकृतियुक्त हो तो व्यक्ति जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करता है। ऐसे व्यक्ति परिश्रमी, कर्तव्यपरायण एवं मानवोचित गुणों से सम्पन्न होते हैं। विपत्ति में भी ये अपने कर्तव्य से विचलित नहीं होते, और हृद से आगे बढ़कर भी मानव की सेवा एवं सहायता करना अपना कर्तव्य समझते हैं।

यदि प्रथम पोरुआ नुकीला, ढलवाँ और नोकदार हो, तथा ऊपर की ओर शनैः-शनैः पतला होता चला गया हो तो व्यक्ति चालाक, स्वार्थी और धूर्त होता है; दूसरे व्यक्ति को अपने दबाव में डालकर मन-चाहा कार्य कराने में भी नहीं हिचकिचाता। अपने मामूली-से स्वार्थ के लिए दूसरे का बहुत बड़ा अहित करने से भी ये नहीं चूकते। अपनी बात पर अड़ने वाले होते हैं, और दूसरे को ठगकर, क्रोध कर, या जैसे भी हो, अपना काम निकालने में रहते हैं।

यदि प्रथम पोरुआ स्थूल, मोटा और ठोस हो तो ऐसा व्यक्ति चिड़चिड़ा और क्रोधी होगा, ऐसा समझना चाहिए। अपने-आपको वह महान् समझता है, तथा घोर दम्भी और स्वार्थी होता है। यदि ऐसे व्यक्ति मधुरभाषी बनें, तो समझना चाहिए कि यह धोखा देने की कोई पृष्ठभूमि बन रही है। स्वभाव के चिड़चिड़े ऐसे व्यक्ति मित्रता के योग्य नहीं होते।

द्वितीय पोरुआ—अंगूठे का दूसरा पोरुआ तर्कशक्ति का स्थान माना गया है। यदि दूसरा पोरुआ पहले पोरुए से बड़ा और सुदृढ़ हो तो व्यक्ति प्रबल रूप से तार्किक होता है। अपने तर्क के सामने वह किसी को भी टिकने नहीं देता। वह अपनी प्रत्येक उचित-अनुचित बात को तर्क के सहारे सिद्ध करने का प्रयत्न करेगा। यदि ये तर्क के क्षेत्र में अपनी हार भी होते देखते हैं, तो हो-हल्ला मचाकर अपनी





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



उँगली अनामिका कहलाती है, जो सूर्य-पर्वत पर स्थित है; इसके पास की उँगली कनिष्ठिका है, जिसका मूल बुध पर्वत पर स्थित है। यह सभी उँगलियों से छोटी होने के कारण ही कनिष्ठिका के नाम से जानी जाती है।

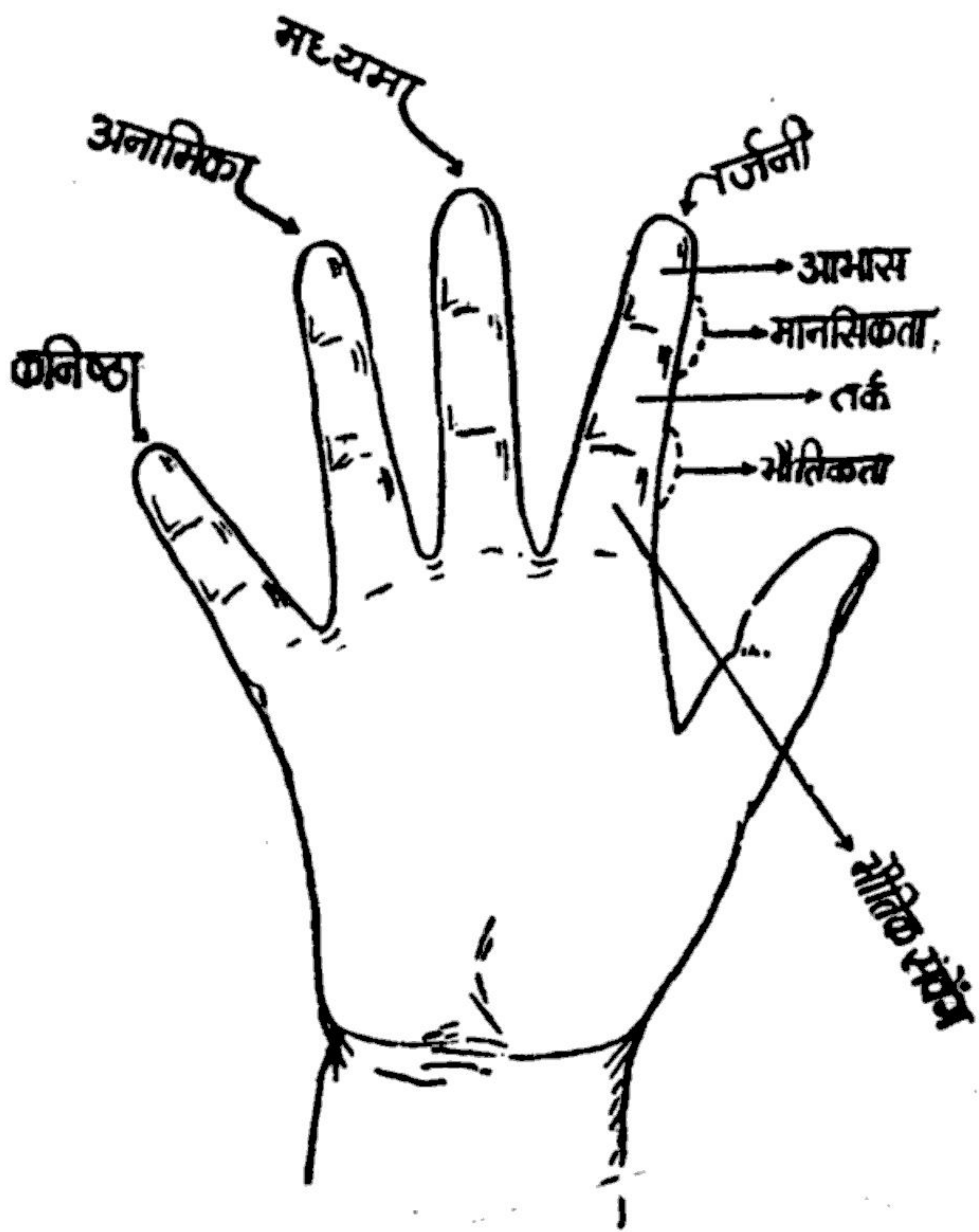
प्रत्येक उँगली के बारे में संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है—

**तर्जनी उँगली**—इसको अंग्रेजी में Index finger या finger of Jupiter भी कहते हैं। अधिकांश व्यक्तियों की यह उँगली अनामिका से छोटी होती है, पर कुछ हाथों में यह उससे बड़ी भी दिखाई देती है। जिस हाथ में यह उँगली अनामिका से लम्बाई में बड़ी हो, वे गौरवयुक्त, घमण्डी, उत्तरदायित्व के पदों पर कार्य करने वाले तथा प्रसन्नचित्त होते हैं। धार्मिक कार्यों में इनकी रुचि नहीं होती, साथ ही ये खुशामदपसन्द भी होते हैं। अपने अधीन कार्य करने वालों पर कड़ाई से नियंत्रण करते हैं, तथा शासन करने की भावना हृद से ज्यादा बड़ी-बड़ी होती है। यद्यपि कई बार समाज में इन्हें निन्दा का भाजन होना पड़ता है, फिर भी अतुल धैर्य और हिम्मत के कारण अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते चले जाते हैं।

यदि तर्जनी उँगली अनामिका से छोटी हो तो व्यक्ति को चालाक समझना चाहिए; अपना काम येन-केन-प्रकारेण निकालने में सिद्ध-हस्त होता है। ऐसे व्यक्ति दूसरों से काम करवाते हैं और बाहवाही स्वयं लूटते हैं। ये व्यक्ति खुदगर्ज, स्वार्थपरायण, होशियार और चालाक होते हैं।

**मध्यमा उँगली**—इसे अंग्रेजी में Finger of Saturn भी कहते हैं, क्योंकि इसके मूल में शनि का पर्वत होता है। यह उँगली तर्जनी और अनामिका से लम्बी होती है, परन्तु लगभग  $1/4$  इंच बड़ी होना शुभता का द्योतक है। यदि यह उँगली  $1/4$  इंच से भी बड़ी हो तो व्यक्ति के जीवन में दुःख, पश्चात्ताप और ग्लानि का आधिक्य ही समझना चाहिए।  $1/4$  इंच बड़ी होना ही ठीक कहा गया है। ऐसी उँगली मानव को बुद्धि प्रदान करती है, तथा व्यक्ति शुभ कार्यों एवं विचारों से उन्नति की ओर अग्रसर होता है। मितव्ययता से जीने वाला ऐसा व्यक्ति समाज में पद, यश और सम्मान प्राप्त करता है।





३७



परन्तु यदि यह उँगली तर्जनी से आधा इंच बड़ी हो तो व्यक्ति विप्लवकारी, कातिल या हत्यारा ही होगा, ऐसा समझना चाहिए ।

**अनामिका उँगली**—इसे *Finger of Apollo* भी कहते हैं । यह उँगली मध्यमा से छोटी तथा तर्जनी से अपेक्षाकृत लम्बी होती है, परन्तु कभी-कभी इसके विपरीत भी देखा गया है; तर्जनी से बड़ी होना शुभ माना गया है, और यह व्यक्ति में दया, प्रेम, स्नेह आदि गुणों का समावेश करती है । परन्तु, यदि यह उँगली मध्यमा के बराबर हो तो व्यक्ति को दुष्ट, घृष्ट और स्वार्थलोलुप बना देती है । ऐसा व्यक्ति भाग्यवादी होता है, तथा धन का अधिकांश भाग जुआ, सट्टा या व्यसन में ही व्यय होता है । ऐसे व्यक्ति असम्भव और निर्दयी होते हैं ।

यदि अनामिका का भुकाव कनिष्ठिका की ओर हो तो व्यक्ति व्यापार से लाभ उठाता है; और यदि यह शनि की उँगली की ओर झुकी हुई हो तो चिन्तनशील एवं आत्मकेन्द्रित होता है ।

**कनिष्ठिका उँगली**—इसे *Little finger* या *The finger of Mercury* भी कहते हैं, क्योंकि इसके मूल में बुध का पर्वत स्थित होता है । प्रत्येक हाथ में यह सभी उँगलियों से छोटी ही होती है । यदि यह उँगली अनामिका के नाखून की जड़ तक पहुँचे तो अत्यन्त शुभकारी मानी गई है । यह जितनी ही ज्यादा लम्बी होती है उतनी ही शुभ कही गई है । ऐसे व्यक्ति सफल प्रशासक, उत्तम अनुसन्धानकर्ता और श्रेष्ठ साहित्यकार होते हैं । यदि यह उँगली अनामिका के ऊपर के पोरुए के अर्द्धभाग तक पहुँचती हो तो यह व्यक्ति धनी, आइ० एस० अधिकारी तथा श्रेष्ठ पदासीन होता है । कभी-कभी यह चतुर्थ श्रेणी कर्मचारी के हाथों में भी दिखाई दे देती है । ऐसे व्यक्ति भी अपने स्तर से ऊपर उठे हुए, मिलनसार तथा श्रेष्ठ गुणों से भूषित होते हैं, तथा जीवन में निश्चय ही वे धनी होते हैं; आकस्मिक रूप से द्रव्य प्राप्त होता है, तथा जीवन का उत्तरार्द्ध आसानी के साथ व्यतीत होता है । कनिष्ठिका उँगली का लम्बा होना सफल जीवन के लिए परमावश्यक माना गया है ।

**उँगलियों पर विशेष तथ्य**—उँगलियों की लम्बाई के साथ-साथ



इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि उँगलियाँ चिकनी हैं या गाँठ-दार। उनके सिरे वर्गाकार, चमसाकार हैं या नुकीले; उँगलियों के पोरुओं पर कैसे चिह्न हैं, आदि-आदि।

दो उँगलियों के बीच का खाली स्थान भी अपना महत्त्व रखता है। अंगूठे और तर्जनी के बीच अधिक दूरी व्यक्ति में मानवीय गुणों—प्रेम, दया, क्षमा का संचार करती है। तर्जनी और मध्यमा के बीच की खाली जगह व्यक्ति के वैचारिक स्वातंत्र्य को प्रकट करती है। मध्यमा और अनामिका के बीच की जगह व्यक्ति की लापरवाही, अन-घड़ता और फूहड़ता प्रदर्शित करती है। इसी प्रकार अनामिका और कनिष्ठिका के बीच की खाली जगह निर्ममता की द्योतक है।

यदि एक उँगली दूसरी उँगली की ओर झुकी हुई हो तो दूसरी उँगली और उसके पर्वत का प्रभाव उस उँगली पर भी देखा जा सकता है।

यदि उँगलियाँ भीतर की ओर झुकी हुई हों तो व्यक्ति दुनिया-दारी में पारंगत होता है। ऐसा व्यक्ति डरपोक तथा प्रत्येक कार्य को प्रारंभ करते समय खूब आगा-पीछा सोचने वाला होता है। यदि उँगलियों का झुकाव बाहर की ओर हो, तो ऐसा व्यक्ति उन्मुक्त एवं उन्नत विचारों का धनी होता है। आर्थिक क्षेत्र में ये सदैव असफलता के शिकार रहते हैं। यदि उँगलियाँ टेढ़ी-मेढ़ी, बंदसूरत और तुड़ी-मुड़ी हों तो व्यक्ति में अपराधजन्य प्रवृत्तियों का विकास करनी है।

१—जिसकी उँगलियों के अग्रभाग नुकीले हों, वह मेधावी होता है।

२—मोटी उँगलियाँ निर्धनता की द्योतक होती हैं।

३—चरटी उँगलियाँ नौकरी एवं सेवाकार्य की ओर प्रवृत्त करती हैं।

४—जिसके हाथ की उँगलियाँ एक सीध में हों, वह व्यक्ति भाग्य-शाली होता है।

५—गठीली उँगलियाँ विवेक, विचारशीलता एवं अध्ययनप्रियता की द्योतक होती हैं।

६—उँगलियों में गाँठें अधिक विकसित हों तो प्रतिभावान् मस्तिष्क



# ઠાંગુલિયાં



નોકીલી ઠાંગુલી



કોનિક ઠાંગુલી



વર્ગાકાર ઠાંગુલી



પૈલી હુડ ઠાંગુલી





को चिन्तित करती हैं ।

७—अत्यधिक उमरी हुई गाँठें, जीवन के प्रति निर्मोह एवं उदासीनता व्यक्त करती हैं ।

८—चिकनी गाँठों वाले व्यक्ति संवेदनशील एवं आस्थावान् होते हैं ।

९—गाँठरहित उँगलियाँ व्यक्ति को गहन दार्शनिक और प्रबल धार्मिक बना देती हैं ।

**उँगलियों पर निशान**—उँगलियों पर पाये जाने वाले निशानों का महत्त्व हस्तरेखाविद् के लिए परमावश्यक है । अपराध-शास्त्र में इन चिह्नों का सर्वाधिक महत्त्व है । प्रसिद्ध हस्तरेखा-विशेषज्ञ नोएल के मतानुसार व्यक्ति के चरित्र, मनोविज्ञान और शारीरिक स्वास्थ्य की जानकारी के लिए इन चिह्नों का ज्ञान अत्यन्त आवश्यक है और इनके द्वारा व्यक्ति का सही-सही मूल्यांकन किया जा सकता है । ये चिह्न निम्नप्रकारेण होते हैं—

१. शंकु—उँगलियों के पोरुओं पर शंकु का चिह्न मानसिक उन्नतिको उद्घाटित करता है । विपरीत परिस्थितियों में भी ये अग्रसर होते रहते हैं, तथा परिस्थिति एवं वातावरण के अनुकूल अपने को ढालने में सक्षम रहते हैं; ऐसे व्यक्ति हृदय-रोगों के शिकार भी पाये जाते हैं ।

२. तम्बू—किसी-किसी व्यक्ति की उँगलियों के पोरुओं पर तम्बूवत् चिह्न पाये जाते हैं । ऐसे व्यक्ति कलाकार, सहृदय, भावुक एवं संवेदनशील होते हैं । मानसिक दृष्टि से ये असन्तुलित रहते हैं ।

३. चक्र—उँगलियों पर चक्र के निशान पाया जाना शुभ कहा गया है । ये व्यक्ति स्वतंत्र विचारों के धनी, मौलिक कार्यों में तत्पर तथा विवेकशील होते हैं और रुढ़िवाद से दूर हटकर प्रगति और नूतनता के प्रेमी होते हैं ।

४. मेहराब—जिन पोरुओं पर मेहराब के चिह्न पाये जाएँ, वे स्वभाव से संशयी तथा शक्की होते हैं । किसी पर भी ये पूरा विश्वास नहीं करते । ऐसे व्यक्ति रहस्यमय तथा अच्छे गुप्तचर होते हैं ।

५. त्रिभुज—यदि दाहिने हाथ की तर्जनी उँगली पर त्रिभुज का



चिह्न दिखाई दे, तो ऐसे व्यक्ति को एकान्तप्रेमी, रूढ़िवादी, रहस्यमयी और योगाभ्यासी समझना चाहिए।

६. तारा—यदि किसी भी उँगली, विशेषकर तर्जनी पर तारा या क्रॉस का चिह्न दिखाई दे, तो वह व्यक्ति प्रबल भाग्यशाली होता है, तथा उसे जीवन में कई बार अप्रत्याशित रूप से धन-प्राप्ति होती है।

७. कन्दुक—यदि उँगलियों के पोहों पर गोल निशान या कन्दुक-चिह्न दिखाई दे, तो वह व्यक्ति आदर्श प्रेमी, आदर्श मित्र और आदर्श भोगी कहा जा सकता है। उसके जीवन में एक विशेष प्रकार की लचक होती है, तथा उसके व्यवहार में संयम पाया जाता है।

८. जाल—जालयुक्त उँगली इस बात को स्पष्ट करती है कि ऐसा व्यक्ति निरन्तर बाधाओं का सामना करता रहेगा, परन्तु इसकी इच्छाशक्ति इतनी प्रबल होती है कि वह संकटों में से भी सही-सलामत निकलकर फिर संकटों से जूझने को उद्यत रहता है। डाकुओं की उँगलियों पर ऐसे चिह्न सहज ही देखे जा सकते हैं।

९. चतुर्भुज—यदि उँगली के पोहों पर वर्ग या चतुर्भुज का चिह्न पाया जाय, तो वह व्यक्ति सदैव उद्यमरत रहता है तथा उद्यम के बल पर लक्ष्मी को वश में रखने में समर्थ होता है।

यदि किसी की उँगली पर एक से अधिक चिह्न दिखाई दें, तो उस व्यक्ति में उनसे सम्बन्धित दोनों फलादेशों का सम्मिश्रण समझना चाहिए।

नाखून—नाखून उँगलियों के अग्रभाग की कवच की तरह रक्षा करते हैं। चिकित्सा-शास्त्री नाखूनों को देखकर रोग का सही अंदाजा लगा लेते हैं।

स्वस्थ नाखून पूरे, चिकने, मुलायम और गुलाबी होते हैं। खुरदुरे और दरारों वाले नाखून अस्वस्थता का बोध कराते हैं।

१—नाखूनों के मूल में चन्द्रमा अर्द्ध-चन्द्राकार में होते हैं। इनके न होने से हृदय की कमजोरी का बोध होता है।

२—यदि यह चन्द्रमा बड़ा और फैला हुआ हो, तो व्यक्ति मिर्गी, मूर्च्छा, रक्तदोष आदि का शिकार होता है।



३—लम्बे और पतले नाखून शरीर के ऊपरी भाग के रोगग्रस्त होने की सूचना देते हैं।

४—छोटे नाखून वाला व्यक्ति हृदयरोग से पीड़ित होता है, ऐसा समझना चाहिए।

५—चपटे, पतले और अविकसित नाखून लकवे की बीमारी के द्योतक होते हैं।

६—नीले रंग के नाखून भयंकर बीमारी के अग्रसूचक कहे जाते हैं।

७—नाखूनों पर सफेद छींटे स्नायविक दुर्बलता के सूचक होते हैं।

८—पीले नाखूनों का घनी निर्दयी होता है, तथा प्रबल स्वार्थरत रहता है।

९—लम्बाई की अपेक्षा चौड़ाई में फैले नाखून समाज में तिरस्कार होने की सूचना देते हैं।

१०—तर्जनी पर सफेद छींटे प्रेम के सूचक हैं, तो काले छींटे गलत कार्यों के सूचक हैं।

११—मध्यमा पर सफेद छींटे यात्रा-योग बनाते हैं, तथा काले छींटे एक्सीडेंट-योग में सहायक होते हैं।

१२—अनामिका पर सफेद छींटे समाज एवं राज्य में सम्मान-वृद्धि के सूचक हैं, तथा काले छींटे अपमान के हेतु बनते हैं।

१३—कनिष्ठिका पर सफेद छींटे व्यापार में लाभ प्रदान करते हैं, एवं काले छींटे व्यापार में हानि के सूचक हैं।

१४—अंगूठे के नाखून पर सफेद धब्बा सफलता का सूचक है, तथा काला धब्बा संवेगों की तीव्रता का कारण होता है।

अतः हथेली का अध्ययन करते समय अंगूठे, उँगलियों, पोहों एवं नाखूनों का विधिवत् निरीक्षण परमावश्यक होता है।



## पर्वत

हथेली के अध्ययन में विभिन्न ग्रहों के पर्वतों का विशेष महत्त्व है, क्योंकि यही वह पृष्ठभूमि है, जो हथेली की विभिन्न रेखाओं को प्रभावित करती है। वे ग्रह, जिनके नाम पर इन पर्वतों का नामकरण हुआ है, विविध विशेषताओं के उत्तरदायी माने जाते हैं; गणित-ग्रह में ग्रह की वास्तविक स्थिति स्पष्ट होती है, तथा यदि कोई ग्रह जन्मकुण्डली में विशेष बलयुक्त होता है, तो वह सम्बन्धित विषयों को विशेष रूप से विस्तार देता है।

परन्तु अनुभव में यह देखने में आया है कि यदि जन्मकुण्डली में कोई ग्रह विशेष बलशाली होता है, तो उस व्यक्ति की हथेली में भी उस ग्रह का पर्वत विशेष उभरा हुआ, स्पष्ट एवं सुघड़ होता है। एक प्रकार से देखा जाय तो जन्मकुण्डली और हथेली में कोई अन्तर नहीं है। हथेली पर की रेखाओं और पर्वतों के आधार पर किसी भी व्यक्ति की जन्मकुण्डली आसानी से बनाई जा सकती है। परन्तु यह कार्य इतना सहज नहीं है। इसके पीछे कठोर श्रम और विशेष अध्यवसाय की जरूरत है।

मेरा अनुभव इस विषय में स्पष्ट है। ऐसे व्यक्ति जिनकी जन्मकुण्डली खो गई है, या जिन्हें जन्म-समय तथा तिथि का ज्ञान नहीं है, हस्तरेखाओं के आधार पर सही-सही जन्म-तिथि तथा जन्म-समय ज्ञात किया जा सकता है। यही नहीं, अपितु हथेली के अध्ययन से किसी भी व्यक्ति की जन्मकुण्डली भी बनाई जा सकती है। मैंने एक-दो नहीं, सैकड़ों व्यक्तियों की इस प्रकार से (हस्तरेखाओं के अध्ययन से) जन्म तिथि निकाली है, तथा जन्मकुण्डली बनाई है जोकि शत-प्रतिशत सह रही है। अतः यह कहना कि हस्तरेखा तथा ज्योतिष का पारस्परिक



कोई सम्बन्ध नहीं, निरा भ्रामक है।

पर्वतों में भी तीन भेद हैं—(१) सामान्य, (२) विकसित तथा (३) अविकसित। यदि ये पर्वत विकसित होते हैं, तो काफी ऊँचे उठे हुए, मांसल, स्वस्थ और लालिमा लिये हुए होते हैं। अविकसित पर्वत ठीक इनके विपरीत होते हैं; उनका उभार सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर ही ज्ञात किया जा सकता है। हथेली में जिस ग्रह का पर्वत सर्वाधिक विकसित होता है, उस व्यक्ति को उसी ग्रह द्वारा संचालित समझना चाहिए, और व्यक्ति के चरित्र में उसी पर्वत के गुण शासन करते हैं।

आधुनिक वैज्ञानिक उन्हें पर्वत न कहकर स्नायु-केशिकाओं का केन्द्र मानते हैं, जो मस्तिष्क के एक विशेष भाग से सम्बन्धित रहते हैं। प्रत्येक पुञ्ज अपनी अलग स्नायविक विशेषताएँ लिये हुए होता है, अतः जो पुञ्ज अधिक विकसित होता है, उससे सम्बन्धित विशेषताएँ मानव के चरित्र में विशेष रूप से दिखाई देंगी। ग्रह भी तथा उनके पर्वत भी इसी सिद्धान्त की पुष्टि करते हैं।

ग्रह, उनके अंग्रेजी नाम तथा सम्बन्धित प्रभावों का संक्षिप्त परिचय नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है—

१. बृहस्पति—इसे अंग्रेजी में Jupiter कहते हैं तथा इसका संबंध इच्छाओं के उन्नयन और प्रदर्शन से है।

२. शनि—अंग्रेजी में यह Saturn कहलाता है। इसका सम्बन्ध आपत्ति, मननशीलता, एकान्तप्रियता तथा चिन्तन से है।

३. रवि—यह अंग्रेजी भाषा में Sun कहलाता है। हाथ में इसका सम्बन्ध राज्य, मानसिक उन्नति तथा विविध कला-कौशल के प्रदर्शन से है।

४. बुध—इसे Mercury कहते हैं। इसका सीधा सम्बन्ध व्यापार, चतुरता तथा वैज्ञानिक उन्नति से है।

५. हर्षल—हिन्दी में इसे प्रजापति तथा अंग्रेजी में Herschel कहते हैं। इसका सम्बन्ध शारीरिक तथा मानसिक क्षमता एवं शक्ति से माना जाता है।

६. नेपच्यून—इसे हिन्दी में वरुण ग्रह तथा अंग्रेजी भाषा में Neptune कहते हैं। विद्वत्ता, प्रभाव, व्यक्तित्व, क्षमता एवं पौरुष से



इसका सम्बन्ध जोड़ा जाता है ।

७. चन्द्र—इसे अंग्रेजी में Moon कहते हैं, तथा हथेली में इससे कल्पना, सहृदयता एवं मानसिक उत्थान आदि गुणों का अध्ययन किया जाता है ।

८. शुक्र—अंग्रेजी में यह ग्रह Venus कहलाता है । सौन्दर्य, प्रेम, भोग, शान-शोक तथा ऐश्वर्य से इसका सम्बन्ध होता है ।

९. मंगल—यह अंग्रेजी में Mars के नाम से पुकारा जाता है । जीवनी-शक्ति, जीवट, परिश्रम एवं पुरुषोचित गुणों का अध्ययन इसी ग्रह से किया जाता है ।

१०. राहु—यह अंग्रेजी में Rahu के नाम से ही जाना जाता है, कुछ लोग इसे Dragon's Head भी कहते हैं । भाग्योन्नति, आकस्मिक द्रव्य-प्राप्ति आदि से इसका सम्बन्ध होता है ।

११. केतु—इसे अंग्रेजी में केतु या Dragon's Tail भी कहते हैं । हाथ पर इस ग्रह से सर्वोन्नति जानी जाती है ।

१२. प्लूटो—यह अंग्रेजी में Pluto तथा हिन्दी में इन्द्र के नाम से जाना जाता है । इस ग्रह से मानसिक चिंतन का अध्ययन किया जाता है ।

ग्रहों का क्षेत्र—हस्तरेखा-विशेषज्ञों के अनुसार हथेली में समस्त ग्रहों के स्थान निर्धारित हैं, और तनिक सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर वे तुरन्त पहचान लिये जाते हैं ।

बृहस्पति—हथेली में इसका स्थान निम्न मंगल के ऊपर तजंजी के आधाररूप में स्थित रहता है, जोकि सावधानी से देखने पर शीघ्र ही पहचान लिया जाता है ।

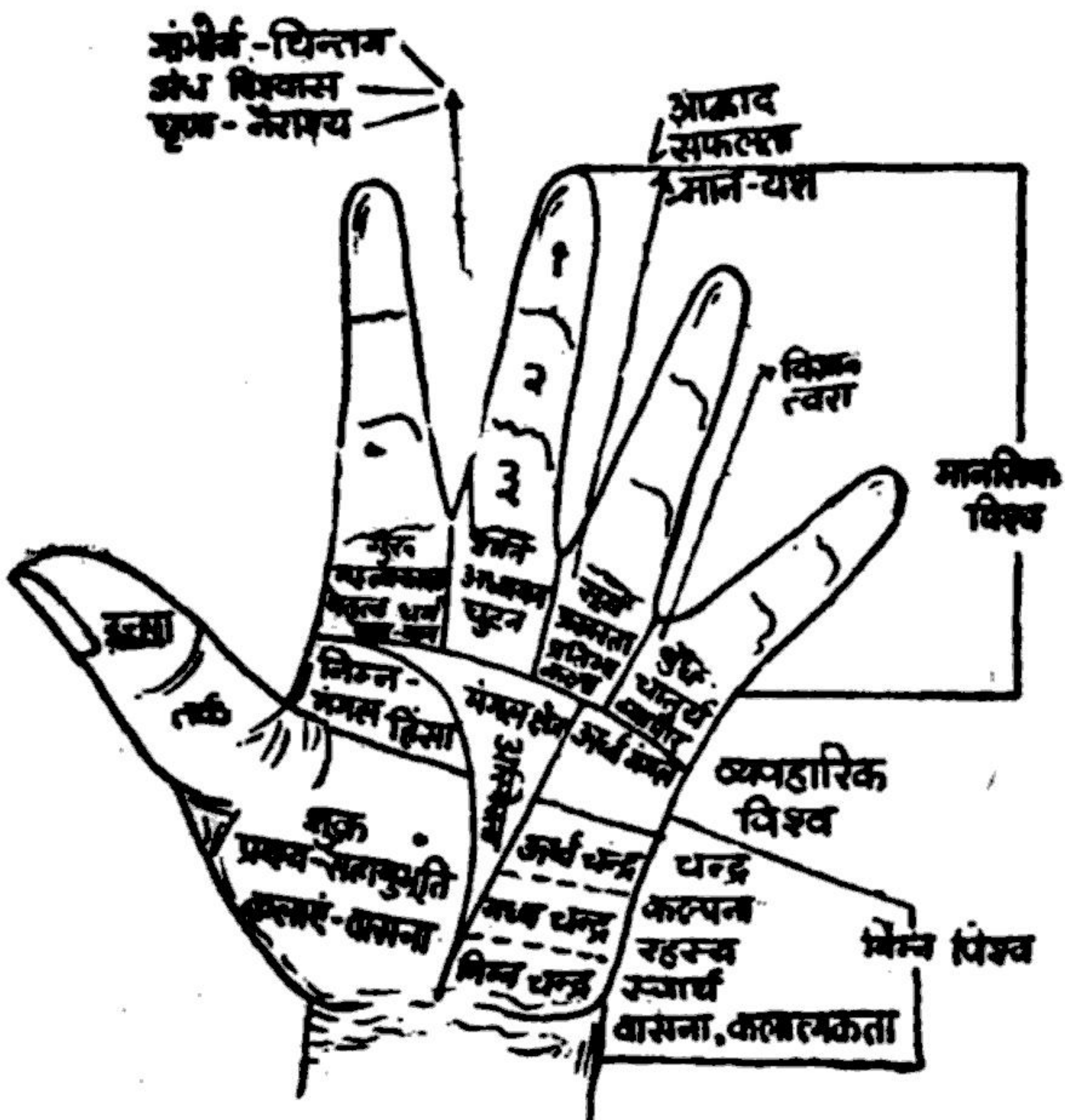
यह स्वभाव से संचालन, नेतृत्व, अधिकार और लेखन का देवता है । तजंजी और गुरु का पर्वत इन गुणों की अभिव्यक्ति करता है ।

बृहस्पति स्वयं देवता होते हुए भी देवगुरु कहलाते हैं, अतः जिन हथेलियों में गुरु-पर्वत सबसे अधिक उभरा हुआ और स्पष्ट हो, उसमें देवोचित सभी गुण पाये जाते हैं । सदैव उन्नति की आकांक्षा करते रहना उसका स्वभाव होता है ।

अपने स्वाभिमान को वे हाथ से नहीं छोते । ऐसा व्यक्ति विद्वान्,



पर्वत





न्यायी, कुलीन, उत्साही, वचनों का निर्वाह करने वाला, परोपकारी, बैरिस्टर, न्याय करने वाला, समाज-मान्य तथा अग्रणी होता है। कठिन-से-कठिन परिस्थितियों में भी वह विचलित नहीं होता। देश के उच्च पदाधिकारी एवं प्रतिष्ठित पदों पर स्थित व्यक्तियों के हाथों का अध्ययन किया जाय, तो निस्सन्देह उनका गुरु-पर्वत विकसितावस्था में दिखाई देगा। जनता के विचारों को अपने अनुकूल बना लेने की उनमें अद्भुत क्षमता होती है। धार्मिक भावनाओं और विचारों में इनकी गहन आस्था होती है।

यदि गुरु-पर्वत अल्पविकसित या कम उभरा हुआ हो तो उनमें इन गुणों की कुछ न्यूनता समझनी चाहिए, और यदि यह पर्वत अविकसितावस्था में हो, तो ऐसे व्यक्ति में इन गुणों का अभाव ही समझना चाहिए।

शारीरिक दृष्टि से गुरु-पर्वत-प्रधान व्यक्ति साधारण कद-काठ के, स्वस्थ, सुढोल और हँसमुख होते हैं। वाचन एवं भाषणकला में वे पारंगत होते हैं तथा जो भी कहते हैं, वह प्रामाणिक और कसौटी पर खरा उतरने-वाला होता है। हृदय से ऐसे व्यक्ति दयालु और परोपकारी होते हैं। आर्थिक पक्ष की अपेक्षा वे सम्मान और यश की ज्यादा महत्वाकांक्षा रखते हैं। अधिकार, स्वतन्त्रता और नेतृत्व के गुण इनमें जन्मजात होते हैं।

ऐसे व्यक्ति हृदय में मधुर और कोमल भावनाएँ रखते हैं। स्त्रियों के प्रति उनका सहज रुझान होता है, तथा सुन्दर, सुशील और सलीकेदार स्त्रियों से इनका सम्पर्क विशेष रहता है। स्त्रियों के हाथों में यह पर्वत उन्नत हो तो उनमें समर्पण की विशेष भावना पाई जाती है।

यदि गुरु-पर्वत का भुकाव शनि की ओर हो तो यह भुकाव व्यक्ति को चिन्तनशील बना देता है। शनैः-शनैः उसमें निराशा की भावना प्रबल होने लगती है; स्वभाव में गम्भीरता, अनास्था और अक्खड़पन आ जाता है।

यदि गुरु-पर्वत और मानसिक विश्व दोनों सबल हों तो व्यक्ति को लेखन-क्षेत्र की ओर प्रवृत्त करता है। साहित्य में ऐसे व्यक्ति पूरी सफलता प्राप्त करते हैं।

गुरु का पर्वत जरूरत से ज्यादा बड़ा और उभरा हो तो व्यक्ति



की घमण्डी बना देता है। ऐसा व्यक्ति स्वार्थी, दंभी और स्वेच्छाचारी हो जाता है।

यदि गुरु की उँगली अस्वाभाविक रूप से दीर्घ हो तो व्यक्ति तानाशाह बन जाता है, तथा निरंकुश शासन में विश्वास करता है। यदि उँगली जरूरत से ज्यादा छोटी हो तो गुरु-पर्वत के गुण समाप्त हो जाते हैं। टेढ़ी-मेढ़ी विकृत उँगली व्यक्ति को चालाक और भीरु बना देती है।

यदि बृहस्पति-पर्वत पर एक या दो क्रॉस के चिह्न हों तो व्यक्ति को धार्मिक क्षेत्र में बहुत ऊँचा उठा देते हैं। यदि इस पर्वत पर चौकोर चिह्न हो तो यह चिह्न व्यक्ति को दैवी आपदाओं से सुरक्षा प्रदान करता है।

यदि गुरु का पर्वत रवि के समान ऊँचा और उठा हुआ हो तो व्यक्ति माहित्य-लेखन से अर्थ एवं यश की प्राप्ति करता है।

अविकसित गुरु-पर्वत लक्ष्यहीनता, काल्पनिकता और साधारण यश प्रदान करता है। भीड़ वगैरह से ये घबराते हैं, तथा एकान्तप्रिय बन जाते हैं।

**शनि**—मध्यमा उँगली के मूल में शनि का निवास माना गया है। यूनानी धर्मशास्त्रों के अनुसार यह कुटिल देवता है। हथेली पर इस पर्वत का विकास असाधारण प्रवृत्तियों का पोषक कहा जाता है। यदि हथेली में यह पर्वत अनुपस्थित हो तो व्यक्ति उल्लेखहीन जीवन बिताने को बाध्य होता है।

मध्यमा उँगली भाग्य की प्रतीक समझी जाती है, क्योंकि भाग्य-रेखा की समाप्ति इसी उँगली पर होती है। शनि-ग्रह पूरी हथेली में विशेष स्थान रखता हो तो व्यक्ति को प्रबल भाग्यवादी बना देता है, तथा निम्न कुलोत्पन्न को भी अत्युत्तम स्थान प्रदान करने में सहायक होता है। ऐसे चिह्न से सम्पन्न व्यक्ति एकान्तप्रिय होता है। उसके सामने एक लक्ष्य होता है, और लक्ष्य-प्राप्ति में वह इतना डूब जाता है कि उसे समाज, घर और स्त्री तक की चिन्ता नहीं रहती। स्वभाव से ये चिड़चिड़े, सन्देहशील और अनास्थावान् हो जाते हैं। कोलाहल और लोगों की भीड़ से ये बचते हैं। शनैः-शनैः वय-प्राप्ति के साथ-साथ ये रहस्यवादी बनते जाते हैं। शनि-पर्वत-प्रधान व्यक्ति ही जादू-





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.





You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



You have either reached a page that is unavailable for viewing or reached your viewing limit for this book.



# पाँच लाख से अधिक पाठक इस पुस्तक से लाभ उठा रहे हैं।

हाथ की रेखाएँ मनुष्य के भूत-भविष्य की तस्वीर होती हैं। आप भी इस विद्या को सीखें और अपने मित्रों और परिचितों का हाथ देखकर भविष्यवाणियाँ करें और उनमें लोकप्रिय बनें।

डा० नारायणदत्त श्रीमाली भारत के गिने-चुने ज्योतिषियों में से हैं। इस पुस्तक में आप उनकी एक विशिष्ट रचना पाएंगे जिस में उन्होंने हस्तरेखा से जन्म-कुण्डली बनाने की भी विधि दी है जो अन्यत्र कहीं नहीं।

हमारा दावा है इस पुस्तक को पढ़कर आप भविष्यवेत्ता बन जायेंगे और सड़क के किनारे बैठने वाले ज्योतिषियों से ठगे नहीं जा सकेंगे।



सुबोध पब्लिकेशन्स